सशक्त नारी, समृद्ध मध्यप्रदेश

मिशन महिला-शक्ति स्वर्णिम युग की ओर

मध्यप्रदेश में महिला सशक्तीकरण, सुरक्षा, सम्मान और समग्र विकास के अद्वितीय कालखंड के रूप में दर्ज हुए हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के दूरदर्शी नेतृत्व और संवेदनशील दृष्टिकोण से प्रदेश में महिला एवं बाल विकास के क्षेत्र में अभूतपूर्व कार्य हुए हैं। मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव की मंशा स्पष्ट है कि हर महिला को सुरक्षित जीवन, हर बालिका को प्रोत्साहन तथा हर बच्चे को बेहतर भविष्य का अधिकार मिले। इन्हीं लक्ष्यों को मूर्त रूप देने के लिए प्रदेश सरकार द्वारा अनेक ऐतिहासिक पहल की गईं, जिनसे समाज में सकारात्मक परिवर्तन की व्यापक लहर उत्पन्न हुई है। यही कारण है कि मिशन महिला शक्ति स्वर्णिम युग की ओर नजर आ रही है। महिलाओं के आर्थिक सशक्तिकरण के लिए मुख्यमंत्री लाड़ली बहना योजना सबसे क्रांतिकारी पहल में से एक रही है। कई राज्यों ने इसका अनुसरण किया है। जून 2023 से प्रतिमाह महिलाओं को नियमित किस्तों के माध्यम से आर्थिक सहायता प्रदान की गई है। तीन बार विशेष सहायता राशि के रूप में प्रति बहन 250 रुपये अतिरिक्त प्रदान किए गए, जिससे लाखों परिवारों को सीधा आर्थिक संबल मिला। करोड़ों रुपये महिलाओं के खातों में पारदर्शी डिजिटल अंतरण के माध्यम से प्रदान किए गए, जिसने मध्यप्रदेश की महिलाओं को आत्मनिर्भरता की नई दिशा दी है।

मिशन शक्ति के अंतर्गत वन स्टॉप सेंटरों, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, पिंक ड्राइविंग लाइसेंस, जेंडर चैंपियन पहल और सशक्त वाहिनी कार्यक्रमों ने महिलाओं और बालिकाओं के सशक्तीकरण को और मजबूती प्रदान की है। वन स्टॉप सेंटरों ने हजारों महिलाओं को सहायता प्रदान की और हजारों महिलाओं को त्वरित राहत और परामर्श उपलब्ध कराया। बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ अभियान के अंतर्गत नवजात बालिकाओं का स्वागत, पूजा-अर्चना और व्यापक पौधारोपण ने समाज में बेटियों के सम्मान की संस्कृति को मजबूत किया है। पिंक ड्राइविंग लाइसेंस और जेंडर चैंपियंस जैसी पहल बालिकाओं के आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता को नई उड़ान दे रही हैं। राज्य एवं जिला स्तर के हब फॉर एम्पावरमेंट ऑफ वुमन ने जनजागरूकता की दृष्टि से अभूतपूर्व कार्य किया है। 100 दिवसीय अभियान, घरेलू हिंसा निरोधक कार्यक्रम, बाल विवाह मुक्ति प्रतिज्ञा, पीसी-पीएनडीटी अधिनियम जागरूकता अभियान, साइबर सुरक्षा प्रशिक्षण और आत्मरक्षा कार्यक्रमों ने समाज में व्यापक संवेदनशीलता विकसित की है। पिछले वर्षों में डेढ़ लाख से अधिक गतिविधियाँ आयोजित हुईं और लाखों नागरिकों की भागीदारी ने यह सिद्ध किया कि मध्यप्रदेश, महिला सम्मान और सुरक्षा के विषय में समाज को साथ लेकर आगे बढ़ रहा है। सखी निवास (वर्किंग वुमन हॉस्टल) और शक्ति सदन ने कार्यरत महिलाओं तथा संरक्षण की आवश्यकता वाली महिलाओं के लिए सुरक्षित आवास का मजबूत तंत्र निर्मित किया है। नए हॉस्टलों के निर्माण से प्रदेश में महिलाओं के लिए और अधिक सुरक्षित सुविधाएँ उपलब्ध हैं। महिला हेल्पलाइन 181 ने लाखों महिलाओं को त्वरित सहायता प्रदान की है, जो शासन की संवेदनशीलता का प्रमाण है।

आंगनवाड़ी सेवाओं को सुदृढ़ बनाने के लिए भी महत्वपूर्ण सुधार किए गए हैं। हजारों मिनी आंगनवाड़ियों को पूर्ण आंगनवाड़ी में उन्नत किया गया, जिसके परिणामस्वरूप सेवाओं की गुणवत्ता और महिलाओं के लिए रोजगार दोनों में वृद्धि हुई है।

'चयन पोर्टल' की शुरुआत ने भर्ती प्रक्रिया को पूरी तरह पारदर्शी बनाया है और हजारों कार्यकर्ताओं व सहायिकाओं को नई नियुक्ति मिली है। प्रधानमंत्री जीवन ज्योति बीमा योजना और प्रधानमंत्री सुरक्षा बीमा योजना के माध्यम से आंगनवाड़ी कार्यकर्ताओं और सहायिकाओं को मजबूत सामाजिक सुरक्षा प्रदान की गई है।

जनजातीय बाहुल्य क्षेत्रों में पीएम-जनमन तथा धरती आबा जनजातीय ग्राम उत्थान अभियान के माध्यम से सैकड़ों नए आंगनवाड़ी केंद्रों का संचालन प्रारंभ किया गया है। इससे जनजातीय महिलाओं और बच्चों को पोषण, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाएँ उनके गांवों तक उपलब्ध कराई गई हैं। हजारों भवनों के निर्माण और उन्नयन से आंगनवाड़ी व्यवस्था अधिक सशक्त और सुरक्षित बनी है। पोषण अभियान के अंतर्गत लाखों बच्चों के विकास की निगरानी के लिए अत्याधुनिक उपकरण प्रदान किए गए हैं। फेस-मैच आधारित सत्यापन ने हितग्राहियों को पारदर्शी और समयबद्ध लाभ दिलाने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई है। 'एक पेड़ मां के नाम' जैसे अभियानों ने पोषण और पर्यावरण दोनों आयामों को जोड़कर जनभागीदारी का नया मॉडल प्रस्तुत किया है। इन सभी उपलब्धियों के मूल में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव की वह स्पष्ट सोच और संवेदनशील दृष्टिकोण है, जिसके कारण आज मध्यप्रदेश महिला सशक्तिकरण में देश का अग्रणी राज्य बनकर उभरा है।

आत्मनिर्भर मप्र में महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण : मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव

मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का कहना है कि नारी शक्ति मिशन के तहत हर जिले की महिलाओं को सशक्तिकरण की मुख्यधारा से जोड़ा गया है। यदि नारी सशक्त होगी, तो समाज और प्रदेश स्वत: सशक्त होगा। सरकार का लक्ष्य 2047 तक मध्यप्रदेश को विकसित भारत के साथ एक समृद्ध और आत्मनिर्भर राज्य बनाना है, जिसमें महिलाओं की भूमिका महत्वपूर्ण है। समाज में महिलाओं को समान अवसर देना न केवल उनके विकास के लिए आवश्यक है, बल्कि समाज के समग्र विकास के लिए भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारी शक्ति मिशन हमारे इस दृष्टिकोण का विस्तार है जिसमें हर जिले से महिलाओं को जोड़ा जा रहा है। मध्यप्रदेश स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिला सशक्तिकरण का एक नया अध्याय लिखा रहा है। एक तरफ आज जहाँ ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाएं स्व-सहायता समूहों के माध्यम से आर्थिक रूप से सशक्त हो रही हैं वहीं लाड़ली बहना योजना, लखपति दीदी योजना और नारी शक्ति मिशन जैसी अनेक महिला केन्द्रित योजनाओं के माध्यम से मध्यप्रदेश की महिलाएं आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त हो रही हैं। स्व-सहायता समूहों ने न केवल प्रदेश की ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत किया है, बल्कि महिलाओं को समाज में सम्मान और स्वावलंबन की नई पहचान दी है। यही कारण है कि नारी शक्ति, मध्यप्रदेश की समृद्धि का अब मुख्या आधार बन गई है।

अन्य योजनाएं

- **खेल-खेल में संवार रहीं नौनिहालों का भविष्य डिजिटल दीदी पूनम**

डिजिटल प्लेटफॉर्म का सही इस्तेमाल अगर समाज को बदलने के लिए किया जाए, तो परिणाम कितने सुखद हो सकते हैं, इसकी मिसाल पेश की है मध्यप्रदेश के छिंदवाड़ा जिले की एक आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ने। परासिया परियोजना के वार्ड क्रमांक 12 की आंगनवाड़ी कार्यकर्ता पूनम चौरसिया आज सोशल मीडिया पर एक चर्चित नाम बन चुकी हैं। पूनम अपनी आंगनवाड़ी के बच्चों को खेल-खेल में पढ़ाने और उनके संपूर्ण विकास के लिए अनूठे प्रयोग कर रही हैं।

- **जनजातीय समाज की सुहनिया मरावी बनीं 'लखपति दीदी'**

मंडला जिले के बिछिया ब्लॉक के छोटे से गांव कन्हारीकला की रहने वाली श्रीमती सुहनिया मरावी अपनी मेहनत और लगन से खुद की जिंदगी बदल कर पूरे जनजातीय समाज के लिए प्रेरणा बन गई हैं। स्थानीय बोली में 'बर्रा' कहे जाने वाले बंजर खेत और सीमित संसाधनों के कारण अभावों में जीने वाली सुहनिया आज आत्मनिर्भर होकर 'लखपति दीदी' के रूप में पहचान बना चुकी हैं। श्रीमती सुहनिया मरावी के उत्कृष्ट कार्यों को देखते हुए उन्हें राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल से मिलने का अवसर भी प्राप्त हुआ।

- **सिवनी की बेटी रंजीता के स्टार्ट-अप ने किया कमाल**

प्रदेश में महिला सशक्तिकरण के लिए विभिन्न विभागों में निरंतर कार्य हो रहा है जो धरातल पर नजर आ रहे हैं। ऐसा ही एक उदाहरण है सिवनी जिले में पहला स्टार्ट-अप प्रारंभ करने वाली सुश्री रंजीता धुर्वे। उन्होंने अपने दृढ़ संकल्प, मेहनत और सरकारी मदद से अगरबती उद्योग में 10 अन्य महिलाओं को रोजगार देने के साथ ही एक मशीन को 10 मशीन तक ले जाने और टर्न ओवर 25 लाख तक ले जाने की अद्भुत उद्यमशीलता का उत्कृष्ट उदाहरण प्रस्तुत किया है।

- **मां नर्मदा को प्रदूषण मुक्त रख रहे हैं 'आटे के दीपक'**

खण्डवा जिले के ओंकारेश्वर के समीप स्थित ग्राम मोरटक्का निवासी श्रीमती विजया जोशी ने 'मां नर्मदा आजीविका स्वयं सहायता समूह' का गठन कर एक अनूठी पहल की है। उन्होंने 'आटे के दीपक' निर्माण का व्यवसाय शुरू किया है। उनका मानना था कि प्लास्टिक के दोने में दीपदान करने से नदी में प्रदूषण बढ़ता है, जिससे मां नर्मदा में रहने वाले जलीय जीव-जंतुओं को भी नुकसान होता है। इसी सोच के साथ समूह की महिलाओं ने पर्यावरण संरक्षण को ध्यान में रखते हुए 'आटे के दीपक' बनाने का कार्य शुरू किया।

मध्यप्रदेश में आंगनवाड़ी केन्द्रों के माध्यम से विभिन्न सेवाएं प्रदान की जा रही हैं

- **पूरक पोषण आहार** - 6 माह से 6 वर्ष आयु के बच्चों, गर्भवती व धात्री माताओं तथा किशोरी बालिकाओं (आकांक्षी जिलों में 14-18 वर्ष) को वर्ष में कम से कम 300 दिन पूरक पोषण आहार प्रदाय किए जाने का प्रावधान।
- **ग्रोथ मॉनिटरिंग एवं टीकाकरण** - माह में निर्धारित 10 दिवसों में 06 वर्ष तक की आयु के सभी बच्चों का ग्रोथ मॉनिटरिंग एवं स्वास्थ्य विभाग के सहयोग से माह में एक दिन केन्द्र पर बच्चों एवं गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण किया जाता है। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता को समुदाय को सूचित करने एवं ड्यू लिस्ट बनाने में सहयोग करती है।
- **शाला पूर्व शिक्षा** - 3 वर्ष से 6 वर्ष तक के प्रतिदिन आंगनवाड़ी आने वाले बच्चों को शारीरिक, संज्ञानात्मक, सामाजिक, भाषाई और सौंदर्य बोध की शिक्षा दी जाती है।
- **पोषण स्वास्थ्य शिक्षा** - आंगनवाड़ी कार्यकर्ता स्वयं एवं आशा तथा स्वास्थ्य कार्यकर्ता के सहयोग से केंद्र स्तर पर समूहिक एवं गृहभेंट का हितग्राहियों के स्वास्थ्य, स्वच्छता एवं संतुलित भोजन आदि के बारे में परामर्श सुविधा प्रदान करती है।
- **स्वास्थ्य की जाँच** - प्रत्येक माह टीकाकरण दिवस पर अथवा नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र स्तर पर ए.एन.एम., सी.एच.ओ. तथा आर. बी. एस. के. दल द्वारा महिलाओं तथा बच्चों की स्वास्थ्य जाँच एवं आवश्यक सलाह प्रदाय किया जाता है ।
- **संदर्भ सेवाएं** - स्वास्थ्य की जाँच के आधार पर जरूरी होने पर महिलाओं और बच्चों को नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र/पोषण पुनर्वास केंद्र उपचार हेतु संदर्भित किया जाता है।

महिलाओं की निकायों में निरंतर बढ़ रही है भागीदारी

प्रदेश में महिलाओं की राजनीतिक भागीदारी लगातार बढ़ रही है। पंचायत स्तर पर महिलाओं का प्रतिनिधित्व 50 प्रतिशत से अधिक पहुंच चुका है, जो महिला सशक्तिकरण की दिशा में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। ग्राम पंचायत, जनपद पंचायत और जिला पंचायत-तीनों स्तरों पर महिलाओं की भागीदारी बढ़ी है। कुल जनप्रतिनिधियों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 52.84 प्रतिशत दर्ज की गई है। ग्राम पंचायत स्तर पर महिला प्रतिनिधियों का प्रतिशत करीब 52.83 प्रतिशत है, जबकि जनपद पंचायत में यह आंकड़ा 53.22 प्रतिशत तक पहुंच गया है। जिला पंचायत में भी महिलाओं की भागीदारी 53.71 प्रतिशत दर्ज की गई है, जो दर्शाता है कि नेतृत्व के उच्च स्तर पर भी महिलाएं तेजी से आगे बढ़ रही हैं। सरकारी योजनाओं और आरक्षण नीति के प्रभाव से महिलाओं को नेतृत्व के अवसर मिल रहे हैं, जिससे वे आत्मनिर्भर बनने के साथ-साथ समाज में नई पहचान भी स्थापित कर रही हैं।

ई-स्कूटर अनुदान योजना से दमोह की सायरा बी बनीं आत्मनिर्भर

श्रम विभाग द्वारा संचालित ई-स्कूटर अनुदान योजना हजारों श्रमिकों के जीवन में परिवर्तन का एक प्रभावी माध्यम बनकर उभर रही है। दमोह में महिला सशक्तिकरण सम्मेलन में मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने श्रमिक महिला सायरा बी को ई-स्कूटर की चाबी प्रदान की। अब उनका जीवन रोज के कामकाज के लिये किसी सहारे का मोहताज नहीं रहा। भवन एवं अन्य संनिर्माण कर्मकार कल्याण मंडल, भोपाल द्वारा संचालित इस योजना में सायरा बी को 40 हजार रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान की गई। इस सहयोग से अब उनके लिए आवागमन आसान हो गया है, जिससे उनके जीवन स्तर में भी सकारात्मक सुधार आया है। ग्रामीण व अर्ध-शहरी क्षेत्रों में आर्थिक गतिविधियों को गति प्रदान करती हैं।

स्व-सहायता समूहों के माध्यम से बदली जिंदगी

मध्यप्रदेश में स्व-सहायता समूह ग्रामीण अर्थव्यवस्था की रीढ़ बन गए हैं। वर्तमान में, राज्य में लाखों स्व-सहायता समूह सक्रिय हैं, जिनमें एक करोड़ से अधिक महिलाएं जुड़ी हैं। ये समूह महिलाओं को आर्थिक स्वतंत्रता, कौशल विकास, और सामुदायिक नेतृत्व के अवसर प्रदान कर रहे हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव का मानना है कि स्व-सहायता समूह न केवल आर्थिक सशक्तिकरण का साधन हैं, बल्कि सामाजिक बदलाव का भी एक जन-आंदोलन है। मध्यप्रदेश सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं के लिए कई महत्वाकांक्षी योजनाएं शुरू की हैं जिनका प्रभाव राज्य के हर कोने में महसूस किया जा रहा है। मुख्यमंत्री उद्यम शक्ति योजना ने हजारों महिला समूहों को कम ब्याज पर ऋण दिलाकर उनके छोटे-छोटे व्यवसायों को सहारा दिया है। अब महिलाएं न सिर्फ घर चला रही हैं, बल्कि दूसरों को रोजगार भी दे रही हैं। हजारों महिला समूहों और हजारों महिला उद्यमियों को 2 प्रतिशत ब्याज अनुदान के रूप में करोड़ों की राशि वितरित की जा चुकी है।

बचत को प्रोत्साहित करती 'लाड़ली बहना योजना

लाड़ली बहना योजना के तहत हर महीने लाखों बहनों के खाते में करोड़ों रुपये की आर्थिक सहायता उनके खातों में पहुंच रही है। इससे न केवल आर्थिक रूप से महिलाओं की स्थिति बेहतर हो रही है बल्कि महिलाएं डिजिटल युग की सहभागी भी बन रही हैं। इसके अतिरिक्त, लाखों महिलाओं को 450 रुपये में गैस सिलेंडर रीफिलिंग के लिए करोड़ों रुपये की सहायता दी जा रही है। यह योजना महिलाओं को आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के साथ-साथ उनके परिवारों में बचत को प्रोत्साहित कर रही है।

मुख्यमंत्री- 'लाड़ली लक्ष्मी योजना' ने पेश की मिसाल

मुख्यमंत्री लाड़ली लक्ष्मी योजना में लाखों बालिकाओं का पंजीकरण हुआ और करोड़ों रुपए की छात्रवृत्ति यूनि-पे के जरिए वितरित की गई है। लाखों बेटियां इस योजना का हिस्सा बनकर लाभान्वित हो रही हैं। मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के द्वारा इस योजना और सशक्त बनाते हुए लाड़ली बेटियों को उच्च शिक्षा के लिए भी प्रोत्साहित करते हुए आर्थिक सहायता प्रदान की जा रही है।

' हम होंगे कामयाब अभियान' से मिला सम्मान

मध्यप्रदेश सरकार द्वारा नारी शक्ति मिशन के तहत जिला, परियोजना और ग्राम स्तर पर 100 दिवसीय जागरूकता 'हम होंगे कामयाब अभियान' चलाया जा रहा। इसमें प्रदेश में जेंडर संवादों, घरेलू हिंसा, बाल विवाह, सायबर सुरक्षा, कार्यस्थल पर उत्पीड़न और डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों की महिलाओं को न केवल जानकारी दी गई, बल्कि उन्हें अपने अधिकारों के लिए खड़ा होना भी सिखाया है।

आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित 'लखपति दीदी'

मध्यप्रदेश सरकार ने स्व-सहायता समूहों के माध्यम से एक लाख से अधिक महिलाओं को 'लखपति दीदी' बनाया है। सरकार का लक्ष्य स्व-सहायता समूहों के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाना है। यह पहल ग्रामीण महिलाओं को उद्यमिता और आर्थिक स्वावलंबन की दिशा में प्रेरित कर रही है।

महिला उद्यमियों को मिल रहा है प्रोत्साहन

मध्यप्रदेश में सैकड़ों एमएसएमई इकाइयों को करोड़ों रुपये की सहायता प्रदान की गई है, जिससे महिला उद्यमियों को प्रोत्साहन मिला है। इसके अलावा, रेडीमेड गारमेंट उद्योग में कार्यरत महिलाओं को प्रति माह 5,000 रुपये की प्रोत्साहन राशि दी जा रही है, जिससे उनकी मासिक आय में बढ़ोत्तरी हो रही है।

'महिला हेल्पलाइन' और 'महिला पुलिस स्टेशन ' दे रहे सुरक्षा

मध्यप्रदेश सरकार ने नारी सुरक्षा को अपनी प्राथमिकता में रखा है। पुलिस बल में महिलाओं की संख्या बढ़ाई गई है और महिलाओं के खिलाफ अपराधों के मामले में सख्त सजा का प्रावधान किया गया है। 'महिला हेल्पलाइन' और 'महिला पुलिस स्टेशन' जैसी सेवाओं को भी मजबूत किया गया है। महिला हेल्पलाइन 181 और चाइल्ड हेल्पलाइन 1098 को अब 112 आपात सेवा से जोड़ा गया है। प्रतिवर्ष हजारों महिलाओं को त्वरित सहायता मिली है। इस योजना के प्रारंभ से अब तक लाखों महिलाओं को लाभ मिल चुका है

देवी अहिल्या नारी सशक्तिकरण मिशन के बढ़ते कदम

यह मिशन मध्यप्रदेश में लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर की 300वीं जयंती के अवसर पर शुरू किया गया। यह मिशन महिलाओं को आर्थिक और सामाजिक रूप से सशक्त बनाने के लिए समर्पित है। इस मिशन के तहत स्व-सहायता समूहों को स्टार्ट-अप अभियान से जोड़ा गया। मुख्यमंत्री के नेतृत्व में राज्य में महिलाओं के लिए न केवल सशक्तिकरण के अवसर पैदा किए गए हैं, बल्कि अब महिलाएं पारंपरिक घरेलू कार्यों से बाहर निकलकर विभिन्न क्षेत्रों में सक्रिय रूप से भाग ले रही हैं।

सैनिटेशन और हाइजीन योजना को यूनिसेफ ने सराहा

सैनिटेशन और हाइजीन योजना के तहत प्रदेश की लाखों बालिकाओं को करोड़ों रुपये की सहायता प्रदान की गई है जिससे किशोरियों के स्वास्थ्य और स्वच्छता को बढ़ावा मिला है। यूनिसेफ ने भी मध्यप्रदेश के इन प्रयासों की सराहना की है।

लोकमाता से मिलेगी प्रेरणा आत्मनिर्भर बनेंगी 'बहनें'

मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने लोकमाता अहिल्या बाई होल्कर के जीवन और कार्यों से प्रेरणा लेते हुए महिला सशक्तिकरण को नया आयाम दिया है। अहिल्या बाई ने महेश्वर से शासन चलाते हुए महिलाओं को साड़ी बुनाई जैसे कौशलों से जोड़ा, जिससे महेश्वरी साड़ियां विश्व प्रसिद्ध हुईं। इसी तरह, डॉ. मोहन यादव ने स्व-सहायता समूहों को उद्यमिता और कौशल विकास से जोड़कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनाने का संकल्प लिया है। यह प्रयास मध्यप्रदेश को नारी सशक्तिकरण के क्षेत्र में देश का अग्रणी राज्य बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है जिससे कृषि, उद्योग, शिक्षा, चिकित्सा और राजनीति जैसे क्षेत्रों में महिलाओं की सहभागिता बढ़ रही है। इस तरह मध्यप्रदेश सरकार की महिला सशक्तिकरण की योजना निरंतर प्रगतिशील है।

D-19102/26